साप्ताहिक

समय नाद

RNI.No. MPHIN/2020/86119

वर्ष 05 | अंक-4 | भोपाल, शुक्रवार, 20 से 26 जनवरी 2024 | Email: samaynaad@gmail.com | पेज 08 | मूल्य 02 रुपए

राम, राजनीति और राजपूत

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में कर दी गई। देश–दुनिया में खुशी मनाई गई। जगह–जगह आयोजन हुए। हर्षोल्लास से धार्मिक आयोजन किए गए। एक ओर संघ और बीजेपी में इस आयोजन की धूम थी तो दूसरी ओर कांग्रेस समेत विपक्षी दलों ने इसे भाजपा का राजनीतिक इवेंट बताकर दूरी बनाए रखी। रामलला की प्राण

संपादक की कलम से

प्रतिष्ठा से पहले चारों मठों के शंकराचार्यों के विरोधी स्वर भी देश–दुनिया ने सुने। हालांकि, बाद में उनके भी सुर सधे। कांग्रेस इसे बीजेपी का राजनीतिक इवेंट बताती है तो उनके नेता राहुल गांधी–प्रियंका गांधी जो पूजा–पाठ कर हिंदू आस्था दिखाते हैं, वह क्या है... फिर तो लोग उसे भी राजनीतिक ढोंग ही कहेंगे।

राम के प्रति इस देश में लोगों की अगाध श्रद्धा है। जनमानस में बसे राम इस राष्ट्र के प्राण हैं। राम का विरोध राष्ट्र के बड़े जनमानस का स्वतः विरोध हो जाता है। कुछ बुनियादी सवाल श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को लेकर जरूर प्रासंगिक हैं। इनमें ट्रस्ट को सिर्फ रामानंद सम्प्रदाय का बताने, जमीन की खरीद-फरोख्त में अनियमितताओं की बात, एक भी सदस्य क्षत्रिय-राजपूत समाज से नहीं लिए जाने जैसे सवाल मायने रखते हैं। भगवान राम स्वयं क्षत्रिय थे और क्षत्रिय- राजपूतों का योगदान/बलिदान अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस मामले को लेकर बिहार से आनंद मोहन सिंह समेत मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि तमाम राज्यों के प्रभावशाली क्षत्रिय-राजपूत सरदार आवाज उठा चुके हैं। सोशल मीडिया पर क्षत्रियविहीन राम जन्मभूमि ट्रस्ट का ट्रेंड रुक नहीं रहा है। जिम्मेदारों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि क्षत्रिय–राजपूत अपनी मांगें मनवाने के लिए रेल की पटरियां उखाड़ने जैसे काम नहीं करते, जिससे राष्ट्र का नुकसान हो या विकास में बाधा उत्पन्न हो। राष्ट्रहित और समाजहित के लिए बलिदान और योगदान देने वाली कौम यदि उचित सम्मान चाहती है तो इसमें बुरा क्या है..! 26 जनवरी को अमृत काल के इस गणतंत्र दिवस पर क्षत्रिय-राजपूतों ने भारत निर्माण में अपने पूर्वजों का बलिदान और योगदान याद किया। नेहरूवियन सिस्टम में अपने साथ हुए धोखे के जख्मों को क्षत्रिय-राजपूत भूले नहीं हैं। श्रीराम मंदिर ट्रस्ट में सम्मानजनक स्थान देकर उनका दर्द कुछ कम तो किया ही जा सकता है।

दिनेश भदौरिया

प्रदेशभर में रही गणतंत्र दिवस की धूम, जनमानस में उत्साह

भोपाल। राजधानी में गणतंत्र दिवस के अवसर पर कई जगह तिरंगा फहराया गया। सरकारी कार्यालयों सहित पार्क और कॉलोनियों सहित कई सार्वजनिक स्थानों पर झंडावंदन हुआ। शहर के सभी स्कूल और कॉलेजों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। राज्य स्तरीय कार्यक्रम लाल परेड ग्राउंड पर आयोजित किया गया। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने झंडावंदन और परेड की सलामी ली। राज्यपाल ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में अयोध्या में भगवान श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा का काम पूरा हुआ है। सालों की प्रतीक्षा के बाद यह अवसर आया तो पूरा देश राममय हो गया। विश्व आजादी के अमृत काल के इस अद्भुत अनुष्ठान का साक्षी बना। मध्यप्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता ने भी अपार श्रद्धा और असीम आनंद से प्रभात फेरी और कलश यात्राएं निकालीं। मध्य प्रदेश के 38 स्थानों पर रामचरित लीला समारोह आयोजित किए गए। प्रदेशभर में 75वां गणतंत्र हर्षोल्लास से मनाया गया।

सीएम डॉ.मोहन यादव ने फिर लगाई पाकिस्तान को लताड़

भोपाल। अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के बयान पर तिलमिलाए पाकिस्तान को फिर से करारा जवाब मिला है। डॉ. मोहन यादव ने खनन मंत्रियों के सम्मेलन के बाद मीडिया से कहा था कि पाकिस्तान लाख आपत्ति जताए, लेकिन सब जानते हैं कि सिंध से विस्थापित होकर लोग यहां आए। इससे पहले अखंड भारत ही रहा है। उन्होंने कहा ननकाना साहिब सहित अखंड भारत के जो हिस्से रहे हैं, उन्हें लेकर हमारी भावनाएं कायम हैं। राष्ट्रगान में पंजाब सिंध गुजरात मराठा आता है तो वह हमारे अखंड भारत के हिस्सों को दर्शाता है। अयोध्या में भगवान राम की प्राण-प्रतिष्ठा हुई है। एक तरह से हमारा सांस्कृतिक अखंड भारत का सपना हजारों साल से रहा है। किसी की आपत्ति करने से वह बात खत्म नहीं हो जाएगी।

उल्लेखनीय है कि 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर सीएम मोहन यादव ने कहा था कि 500 साल के संघर्ष के बाद यह समय आया है। दो हजार साल पहले सम्राट विक्रमादित्य ने अयोध्या में मंदिर बनाया था। आक्रांताओं ने उसे ध्वस्त कर दिया था। हिंदू समाज ने इस बात को लेकर लंबी लड़ाई लड़ी। सुप्रीम कोर्ट ने इस बात की पुष्टि की कि यहां मंदिर था और हिंदुओं को इसका हक मिलना चाहिए। उन्होंने एक जगह यह भी कहा था कि इसे अखंड भारत के पहले कदम के तौर पर देखा जाना चाहिए। सीएम के इस बयान पाकिस्तान विदेश मंत्रालय बयान जारी कर ऐतराज जताया था। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने बयान में यह भी कहा कि- सदियों पुरानी मस्जिद को 6 दिसंबर 1992 को चरमपंथियों की भीड़ ने ध्वस्त कर दिया था। अफसोस की बात है कि

भारत के सुप्रीम कोर्ट ने न केवल इस घृणित कृत्य के लिए जिम्मेदार अपराधियों को बरी कर दिया, बल्कि ध्वस्त मस्जिद के स्थान पर एक मंदिर के निर्माण की भी अनुमति दे दी। पाकिस्तान ने अपने बयान में मध्यप्रदेश सीएम के पिछले दिनों दिए गए बयान का भी उल्लेख किया है। पाकिस्तान के इस बयान पर सीएम डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को फिर करारा जवाब दिया है।इसके साथ ही पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ और मध्य प्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव के बयानों का हवाला देते हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इस तथाकथित इस्लामोफोबिया, हेट स्पीच और हेट क्राइम पर संज्ञान लेने की गुजारिश की थी।

श्रीराम मंदिर का निर्माण है सनातन की विजय

कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर, इतिहासविद्

1950 के बाद बने भारतीय गणराज्य के प्रारंभिक दशक वस्तुत-ब्रिटिश इंडिया के नेहरूवादी उत्तराधिकारियों के धर्म निरपेक्ष और उसके साथ जुड़े स्वतंत्र संप्रभुतासंपन्न सनातनी राजतंत्रों के धर्म सापेक्ष सिद्धांतों के बीच का संघर्ष है। ब्रिटिश इंडिया की औपनिवेशक ताकतें, साम्यवादी, नेहरूवादी और तुष्टीकृत मुसलमानों की धुरी भारतीय मानस को कुछ दशकों तक षड्यंत्रपूर्वक बरगलाने में सफल रही। चूंकि तीन–चौथाई भारत उन स्वतंत्र राजतंत्रों के मिलने से बना था, जो हजारों वर्षों से सनातन धर्म के प्रतीकों और सिद्धांतों के आधार पर जीवन जी रहे थे, इसलिए देर–सवेर यह सकारात्मक सनातन के धर्म सापेक्ष सिद्धांत नेहरूवादी नेतृत्व की उस धुरी को परास्त कर पूरे भारत पर लागू होना अवश्यंभावी था। जितने भी स्वतंत्र राजतंत्र भारत में सम्मिलित हुए, उनके राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रीय निशान, राजदंड, राज संहिता सनातन धर्म वाली थी। जैसे किसी राज के झंडे पर हनुमानजी अंकित हैं तो किसी पर भगवान सूर्य। किसी राज के ध्वज पर पांचजन्य शंख, सुदर्शन चक्र या ऐरावत है तो किसी के ध्वज पर भगवान गणेश या शेषनाग विराजे हैं। 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि स्थान पर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा कोई छोटी घटना नहीं है। वस्तुतः यह 500 वर्ष पूर्व के इस्लामी आक्रमणकारियों की परम्परा पर सनातन की विजय तो है ही, साथ ही साथ यह धर्म निरपेक्षता और पंथ निरपेक्षता की व्यर्थ बहस में नेहरूवादियों द्वारा फंसा दी गई राज व्यवस्था पर उस स्वतंत्र सनातनी प्रजा के मानस की विजय है तो आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उन शक्तियों पर जीत दर्ज कर रही है।

राजतंत्रों का सनातन के प्रति सदैव रहा समर्पण

मेवाड़, मारवाड़, ग्वालियर, कश्मीर, होल्कर, बड़ौदा, राजकोट, बुंदेलखंड जैसे सभी राजतंत्रों अपने राज्य की सीमा से बाहर जाकर हरिद्वार, प्रयागराज, बनारस, अयोध्या, मथुरा–वृंदावन में अनेक मंदिरों, घाटों, धर्मशालाओं का निर्माण कराया। सनातन आधारित अखंड भारत की अवधारणा इन हिंदू राजतंत्रों के व्यवहार से स्पष्ट प्रमाणित होती है। अयोध्या में भगवान श्रीराम जन्मभूमि की पुनर्स्थापना अखंड सनातन भारत की पुनर्स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरक प्रसंग है। निकट भविष्य में माता गांधारी का गांधार, माता हिंगलाज का बलूचिस्तान और राजकुमार लव का लाहौर समेत अखंड भारत के हिस्से वापस आने की सुखद कल्पना देश का जन मानस करने लगा है।

विशेष है यह गणतंत्र दिवस

यह गणतंत्र दिवस इसलिए विशेष है क्योंकि भारत अघोषित हिंदू राष्ट्र बन चुका है। आम जनता और शासन का व्यवहार इसका उदाहरण है। हिंदुओं के सबसे बड़े आराध्य श्रीराम की जन्मभूमि पर जब प्राण प्रतिष्ठा हो रही थी, उस समय भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 11 दिन का कठोर तप करने के बाद मुख्य यजमान की भूमिका में थे। सारे देश में शासकीय अवकाश घोषित किया गया था। किसी मंदिर की स्थापना के अवसर पर शासकीय अवकाश घोषित किया जाना और देश की सभी सरकारी इमारतों पर सरकारी खर्च पर विद्युत साज–सज्जा किया जाना इसे और भी स्पष्ट करता है।

रॉयल भगवान एस्टेट, गेहूंखेडा, कोलार रोड पर भगवान श्रीराम दरबार का भव्य आयोजन किया गया। 22 जनवरी को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर हुए इस कार्यक्रम में धर्मेंद्र द्विवेदी, शिवेंद्र सिंह चौहान, राधा चौहान, रानू राठी, रीना वर्मा, संध्या हुंडैट, रेनू सक्सेना, तान्या चौहान, तन्मय चौहान, ध्रुव वर्मा, ध्रुविक राठी समेत कॉलोनीवासी महिला-पुरुष और बच्चे शामिल हुए।

सिंह टेडर्स

टाईल्स एंड मार्बल | सेनेट्री वेयर | पाईप फिटिंग | सीपी फिटिंग

हार्डवेयर आइटम

गगनदीप सिंह
9111308045

यश भदौरिया
8770529007

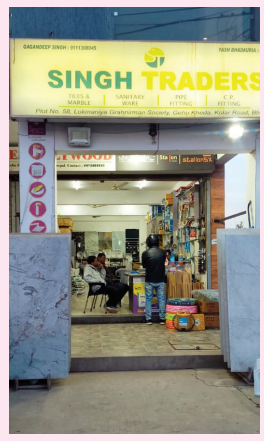

प्लाट नंबर 58, लोकमान्य गृहनिर्माण सोसायटी, गेहूंखेड़ा, कोलार रोड भोपाल

हर्षोल्लास से मनाय गणतंत्र दिवस

भोपाल। कोलार रोड पर गौरव नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में 75वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान देशभक्ति की विभिन्न प्रस्तुतियां दीं गईं। बाद में मिष्ठान वितरित किया गया। रहवासियों ने आगामी स्वतंत्रता दिवस को भारत पर्व के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

भारत के निर्माण में राजपूत राज्यों का योगदान

कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर,
इतिहासविद्

आज तक ब्रिटिश इंडिया की आजादी को पूरे सांस्कृतिक राष्ट्र भारत की आजादी बताया और पढ़ाया गया। कोई राष्ट्र गुलामी के मानस से तरक्की नहीं कर सकता, सिर उठाकर खड़ा नहीं हो सकता। 15 अगस्त 1947 को आज के भौगोलिक भारत का करीब एक चौथाई हिस्सा ही आजाद हुआ था, शेष राज्य स्वतंत्र और संप्रभुतासंपन्न थे। ब्रिटिश इंडिया से आजादी के बाद भारत निर्माण के सच विषय पर प्रख्यात इतिहासकार और श्री राजपूत महापंचायत के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर से समय नाद ने विस्तार से बात की।

कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि सांस्कृतिक राष्ट्र भारत के एक मजबूत राजनीतिक, संप्रभुतासंपन्न इकाई के रूप में स्थापित होने में राजपूत राजतंत्रों योगदान का बहुत महत्वपूर्ण है। 15 अगस्त 1947 के बाद भारतीय सांस्कृतिक भूभाग में सैकड़ों संप्रभुतासंपन्न, स्वतंत्र, जनहितैषी और लोकप्रिय राजतंत्र थे। इन राजतंत्रों ने एकजुटता की अनूठी मिसाल प्रस्तुत करते हुए अपनी–अपनी संप्रभुता त्यागकर भारतीय गणराज्य का निर्माण किया। फिर यह गणराज्य अगले सात दशकों में उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर हुआ।

राष्ट्र निर्माण के सच्चे इतिहास को लिखने का समय आ गया है। विश्वगुरू रहा सोने की चिड़िया भारत फिर से उस गौरव को तभी प्राप्त कर पाएगा, जब स्वतंत्रता का सच्चा भाव भारतीय जनमानस में स्थापित होगा और गुलामी के झूठ से उसे मुक्ति मिलेगी। आज के भौगोलिक भारत के संदर्भ में तत्कालीन संप्रभुतासंपन्न राजनीतिक राज्यों की बात की जाए तो स्पष्ट होता है कि 1947 के पहले का ब्रिटिश इंडिया बंगाल से लेकर पंजाब तक के मैदानी इलाके तक सीमित था। साथ ही, देश के मद्रास, बम्बई जैसे कुछ सीमित क्षेत्रों में अंग्रेजों ने अपने नए–नए व्यापारिक केंद्र बनाए थे। इसके साथ ही ब्रिटिश इंडिया की मौजूदगी दूरदराज के कुछ पहाड़ी क्षेत्रों में भी थी। ये क्षेत्र तत्कालीन स्थानीय शासकों के लिए अनुपयोगी होने के कारण उनके सीधे प्रभाव में नहीं थे। ऐसे क्षेत्रों में नीलगिरी की पहाड़ियों में ऊटी, सतपुड़ा में पचमढी, गोंडवाना के जंगलों का सीमित हिस्सा, हिमालय में मसूरी, शिमला जैसे छोटे और नए बसाए नगर ही शामिल थे। शेष भारत जिसमें ऐतिहासिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र और नगर शामिल थे। इनमें श्रीनगर, ग्वालियर, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, राजकोट, बड़ोदरा, सूरत, इंदौर, उज्जैन, रीवा, बस्तर, मैसूर, त्रावणकोर, तिरुवनंतपुरम जैसे तमाम नगर संपन्न आर्थिक केंद्रों के रूप में अंग्रेजों से स्वतंत्र असतित्व रखते थे। बंगाल के पूर्व में त्रिपुरा, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, असम, सिक्किम के साथ भूटान और नेपाल भी स्वतंत्र संप्रभुतासंपन्न राजतंत्र थे। ये राजतंत्र भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अभिन्न हिस्सा थे, लेकिन अंग्रेजों के अधीन ब्रिटिश इंडिया का हिस्सा नहीं थे। दक्षिण में तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और ओडिशा में भी नाम मात्र का हिस्सा ब्रिटिश इंडिया के अधीन था।

राष्ट्रवाद, राष्ट्र धर्म और हिंदू एकता के भाव से एक मुक्त भारत का निर्माण बहुतायत राजपूत राजाओं ने किया। चार्टर आफ इंडिपेंडेंस में स्पष्ट लिखा गया है– हम ब्रिटिश इंडिया को स्वतंत्र करते हैं और संप्रभुतासंपन्न भारतीय राज्यों के साथ समस्त संधियां आज से समाप्त होती हैं। समस्त 565 स्वतंत्र राज्यों के विवेकाधिकार पर छोड़ते हैं कि वे चाहें तो भारत में शामिल हों या पाकिस्तान में शामिल हों या पूर्व की तरह स्वतंत्र बने रहें।

यह ध्यान देने योग्य है कि विभिन्न राज्य अगले दो–तीन साल में भारत के साथ जुड़े। उनमें से कई ने लेटर आफ अक्सेशन या विलय पत्र को स्वेच्छा से हस्ताक्षरित किया, लेकिन हैदराबाद, जूनागढ़ और भोपाल जैसे मुस्लिम राज्य लेटर आफ एनेक्सेशन या अधिग्रहण पत्रों के माध्यम से शासकों की अनिच्छा से शामिल किए गए। ये बात भारतीय जनमानस को कभी बताई नहीं गई।

रेडक्लिफ लाइन जिसे भारत और पाकिस्तान के बीच की सीमा रेखा के तौर पर पढ़ाया गया, असलियत में मात्र ब्रिटिश इंडिया को बांटती थी। कश्मीर, राजस्थान और गुजरात के साथ की पाकिस्तानी सीमा रेडक्लिफ लाइन नहीं, बल्कि वहां के स्वतंत्र शासकों द्वारा बनाई गई सीमा रेखा थी।

1938 के हरिहरपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने यह तय किया था कि हम ब्रिटिश इंडिया के बाहर अन्य स्वतंत्र भारतीय राज्यों में भी संगठन का विस्तार करेंगे। जाहिर है, इससे पहले असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन या कोई भी कांग्रेस के आंदोलन इन स्वतंत्र राज्यों में नहीं हुए। 1938 के बाद अगले 6 साल तक ब्रिटिश इंडिया और कांग्रेस द्वितीय विश्वयुद्ध में व्यस्त हो गए। इसलिए इन 6 वर्षों में ये महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराने में नाकामयाब रहे।

ब्रिटिश इंडिया के क्षेत्र में हो रही उथल–पुथल को स्थायित्व देने के लिए राजपूत राजाओं ने तय किया कि ब्रिटिश इंडिया वाले हिस्से के शेष भारत को साथ मिलाकर बड़ी राजनीतिक शक्ति का निर्माण किया जाए। चैम्बर आफ प्रिंसेज या नरेंद्र मंडल की अगुवाई और मार्गदर्शन में ब्रिटिश इंडिया के तत्कालीन गृह मंत्री वल्लभभाई पटेल और गृह सचिव वीपी मेनन को इस काम पर लगाया गया।

चिर स्वतंत्र राजपूत

तेरी कैसे मानूं कि कभी हम गुलाम थे
हर दौर में खुद के सिक्के, लश्कर और निजाम थे
बुजुर्गों ने मेरे नहीं वांचे कभी कलमा–ओ–कुरान थे
दो–चार फिरंगी भी मेरे दरबार में दीवान थे
हर दौर में खुद के झंडे और खुद के निशान थे
तेरी कैसे मानूं कि कभी कम गुलाम थे.....

— कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर, इतिहासकार और रचनाकर

आस्था का संगम

हनुमानजी के स्वरूप में तिलक नगर कॉलोनी, भोपाल के समाजसेवी राजेश पटेल ने रामायण सीरियल में भगवान राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल का अभिवादन किया। उल्लेखनीय है कि राजेश पटेल अभी तक कई कार्यक्रमों में हनुमानजी के स्वरूप में प्रस्तुति दी चुके हैं।

पंडित हलायुद ने किया ब्रह्मक्षत्र शब्द का प्रयोग...

भारत का प्राचीन इतिहास सामग्री बहुत ही दुर्लभ है, लेकिन अपने पूर्वजों के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानने, समझने और ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रहती है। सही इतिहास हमें सच्चाई तक ले जाता है। भोपाल के संस्थापक राजा भोज के बारे में अध्ययन करते समय कई चीजें सामने आईं जो अभी तक नहीं जानी थीं। राजा मुंज के निर्देश पर बालक भोज को मारने के लिए वत्सराज जंगल में ले जाता है। उस समय खून से बरगद के पत्ते पर दो श्लोक लिखकर बालक भोज वत्सराज को देता है और कहता है कि ये मुंज को दे देना। इसे पड़कर वत्सराज का हृदय परिवर्तन हुआ और उसने भोज की हत्या नहीं की। वत्सराज ने राजकुमार भोज को अपने यहां छिपाकर रखा। बाद में यही राजकुमार भोज भारत में एक शक्तिशाली महान शासक, महान विद्वान और एक कवि के रूप में विख्यात हुए। उन्होंने स्वयं अन्य विद्वानों और कवियों को बहुत सम्मान दिया। विक्रम संवत 1076 का अभिलेख राजा भोज का सबसे प्राचीन उल्लेख माना जाता है।

उनकी जाति के विषय में सबसे प्राचीन उल्लेख मुंज के दरबार के पंडित हलायुद् का है। हलायुद् ने मुंज के लिए 'ब्राह्क्षत्रकुलीन' शब्द का प्रयोग किया है। संभवतः 'ब्रह्मक्षत्र' शब्द से तब जातीय गणित होती थी। जिनमें ब्राह्मण और क्षत्रियो दोनों के गुण विधमान होते थे, उन्हें ब्रह्मक्षत्र कहा जाता होगा। परमार विद्वान थे और वीर भी। यह भी संभव है कि धर्म को संकट में देख कर पल्लव और सातवाहन ब्राह्मण कुलों की तरह उन्होंने भी तलवार संभाली हो। जहां तक साहित्य से संबंध है, भोज का संबंध प्रायः भोज विद्वन्मंडल से माना जाता है। उनका नाम और उनकी सभा भी विद्वानों से पूर्ण थी।

– डॉ. सविता सिंह भदौरिया
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

क्रमशः अगले अंक में...

जूनागढ़ के चंद्रवंश का इतिहास

अजय सिंह
अध्यक्ष, मध्यप्रदेश पेट्रोलियम
डीलर्स एसोशिएशन

चंद्रवंशी राजपूत की मुख्य गादी जूनागढ़ रही है इस चंद्रवंशी/यदुवंशी कुल का इतिहास सन 875 से 1505 ईस्वी तक के काल का पूरा विवरण दे रहा हूं राजपूतों में मुख्य रूप से दो ही वंश होते हैं एक सूर्यवंश और दूसरा चंद्रवंश लेकिन मध्यकाल में विद्वान लोगों ने अपनी सुविधा अनुसार या हो सकता है उसे समय की उनकी आवश्यकताओं को देखते हुए उन्होंने दो वंशो की स्थापना की एक अग्नि वंश और एक ऋषि वंश इन वंशो को बनाकर 37 कुलो में बांटा गया

मेरा मुद्दा चंद्रवंश जिसे यदुवंश भी कहा जाता है की शाखा पर मुख्य रूप से बताना है इस वंश की मुख्य गादी जूनागढ़ रही है इस विशाल वंश ने कई छोटी बड़े उपवंशों को जन्म दिया है जैसे चूड़ासमा,जाडेजा भाटी, सरवैया, वारैया,लाठियां,जादव जादौन,खंगार,रायजादा जैसे 34 वंशो को जन्म दिया

इस वंश का मैं परिचय दे दूं

- वंश चंद्रवंश
- गोत्र अत्रेय
- शाखा माद्यानी
- कुलदेवी मां अंबे
- आदि पुरुष भगवान नारायण
- शंख अजेय
- नदी कालिंदी
- नगाड़ा अजीत
- मुख्य गादी जूनागढ़

भगवान आदि नारायण की 119 वी पीढ़ी में गर्वगोठ नामक राजा हुए जिन्होंने ई सन 31 में शोडितपूर पर राज्य किया तथा गर्वगोठ की 22 वी पीढ़ी में राजा देवेंद्र हुए इनके चार पुत्र असपत नरपत गजपत और भूपत हुए जयेष्ठ पुत्र असपत को शोडितपुर का राज्य मिला गजपत ने विक्रम संवत 708 वैशाख सुदी 3 दिन शनिवार को रोहिणी नक्षत्र में गजपत के नाम गजनी शहर बसाया तथा उनके भाई नरपत को जाम की पदवी देकर राजा बनाया नरपत जाम के वंशज जडेजा कहलाए राजा भूपत ने दक्षिण में जाकर शैलेंद्रपूर जीता तथा भाटिया नगर बसाया और वहां के राजा कहलाए उनके वंशज भाटी कहलाए जो बाद में जैसलमेर के संस्थापक बने गजपत के 15 पुत्र हुए बड़े पुत्र का नाम शालवाहन शालवाहन के पुत्र यदुमायान और यदुमायन के पुत्र जसकरण जसकरण के पुत्र समाकुमार और इनके पुत्र चूड़ा चंद्र चूड़ाचंद्र के नाना वामनस्थली जिसे आज वनस्थली कहा जाता है के राजा थे इनकी कोई संतान नहीं होने से इन्हें वामनस्थली का राजा बनाया चूड़ाचंद्र ने आसपास के राज्यों को जीत कर सोरठ की स्थापना की इसका उल्लेख वनस्थली के पास धांधूसार के हानिभाव में स्थित शिलालेख में वर्णित है

श्री चंद्रचूड़ चूड़ाचंद्र चूड़ा सामान मधु मधुतदायत!
जयति नृपदंश वंशतास संस्तप्रसन वंश !!

अर्थात जिस प्रकार चंद्रचूड़(शंकर) के मस्तिष्क पर चंद्रमा शुभ शोभित है उसी प्रकार सभी उच्च कुल के राजाओं के उपर चंद्रवंशी चूड़ाचंद्र सुशोभित है यहीं से इस वंश को समा नाम मिला चंद्रचूड़ ने ईस्वी सन 875 से ईसवी सन 907 तक राज किया चंद्रचूड़ के पुत्र हमीर हुए हमीर के पुत्र मूलराज ने ईस्वी सन 960 से 915 तक राज्य की इन्होंने सिन्ध पर आक्रमण कर सिन्ध को भी जीता था मूलराज के जयेष्ठ पुत्र विश्वराह ने 915 से 940 तक राज्य किया तथा नलितपुर राज्य को जीतकर इसी तरह इन्होंने सौराष्ट्र का लगभग समस्त भूभाग जीतकर कर जूनागढ़ को राजधानी बनाया विश्व राह के पुत्र ग्रहरिपु हुए इनके कई नाम प्रचलित हुई जैसे ग्रहार, ग्रहार सिंह,ग्रहारियो अपने नाम में रा की पदवी धारण करने वाले यह पहले राजा बने कच्छ के राजा जामलक्ष फुलानी पाटन के राजा मूलराज सोलंकी रा गृहरीपु के समकालीन थे

ईस्वी सन 979 में आरकोट के युद्ध में लाखा फुलानी की मृत्यु हुई और रा गृहरीपू को पाटन का सर्व स्वामित्व स्वीकार करना पड़ा गृहरीपू के पुत्र रा कवार ने 907 से 1003 तक राज्य किया

रा नवधन ने 1025 से1044 तक राज किया

ई सन 1026 में मोहम्मद गजनी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया नवगढ़ ने वीरता पूर्वक लड़ते हुए गजनी की सेना को परास्त किया रानवगड के जयेष्ठ पुत्र राखंगार जूनागढ़ की गादी पर बैठे इन्होंने वनस्थली में प्रसिद्ध बावड़ी का निर्माण कराया था उनके पुत्र नवग्रह द्वितीय ने इस मिशन 1067 से 1097 तक राज्य किया उसके पश्चात नवगढ़ ज्योति के बाद उनके पुत्र राजा खंगार तृतीय ने जूनागढ़ के राज्य पर राज्य किया

पाटन के राजा जयसिंह सोलंकी ने लगातार 12 वर्षों तक जूनागढ़ से आक्रमण करते रहे अंत में जब हर बार हार मिली तो उन्होंने राजा रा खंगार द्वितीय के भांजे देवल और विसल (जो की जय सिंह राजा के भतीजे भी थे) को अपनी तरफ मिलकर पुरे जूनागढ़ पर आक्रमण किया इस आक्रमण में राजा रा खंगार द्वितीय की हार हुई और वह वीरगति को प्राप्त हुए राजा जयसिंह ने बलपूर्वक उनकी रानी रानकदे को साथ ले जाना चाहा रानकदे महारानी बहुत ही तपस्वी महारानी रही इस दौरान इन्होंने अपनी रक्षा के लिए गिरनार पर्वत से रक्षा का आवाह्न किया उसी समय गिरनार पर्वत से बड़ी-बड़ी चट्टाने राजा जयसिंह की सेना पर गिरने लगी यह देखकर राजा जयसिंह घबरा गए और महारानी के कदमों में गिरकर माफी मांगी तत्काल महारानी ने माफ करते हुए हाथ के इशारे से गिरनार पर्वत से गिर रही चट्टानें को इशारा करके रोक दिया आज भी आप अगर गिरनार पर्वत पर भ्रमण के लिए जाएं तो वह चट्टानें साक्षात प्रमाण है जिसे देखकर आप आश्चर्यचकित होते हैं की अरे यह तो चट्टान अभी गिर जाएगी उसके बाद महारानी ने अपने आप को भस्म कर लिया मतलब सती हो गई सती होने के पूर्व महारानी ने राजा जयसिंह को निसंतान होने का श्राप दिया तथा अपने पति का नाम आगे चलकर वंश के रूप में जाना जाएगा तभी से खंगार राजवंश की स्थापना हुई

आज भी बदावन के पास भोगल नदी जो कि गुजरात में स्थित है के किनारे पर सती मां राणकदे का मंदिर भव्य स्वरूप बना हुआ है सती मां के नाम से बॉलीवुड ने भी एक फिल्म बनाई थी

रा नवगढ़ तृतीय ने ई सन 1125 से 1140 तक राज्य किया इसके पश्चात उनके जयेष्ठ पुत्र कबाट द्वितीय ने 1140 से 1152 तक राज किया इनके तीन पुत्र हुए खेत सिंह जय सिंह और कान्हा पाल खेतसिंह महाराजा पृथ्वीराज चौहान के विश्वसनीय सहयोगियों में से रहे हैं जूनागढ़ भ्रमण के दौरान महाराजा पृथ्वीराज चौहान ने खेत सिंह की वीरता वीरता और पराक्रमी योद्धा के गुणों को देख लिया था इसीलिए वह अपने साथ दिल्ली ले आए थे कान्हा पाल कादलसर रियासत के राजा बने इसके पश्चात रा जय सिंह ने 1152 से 1180 तक राज्य किया.....

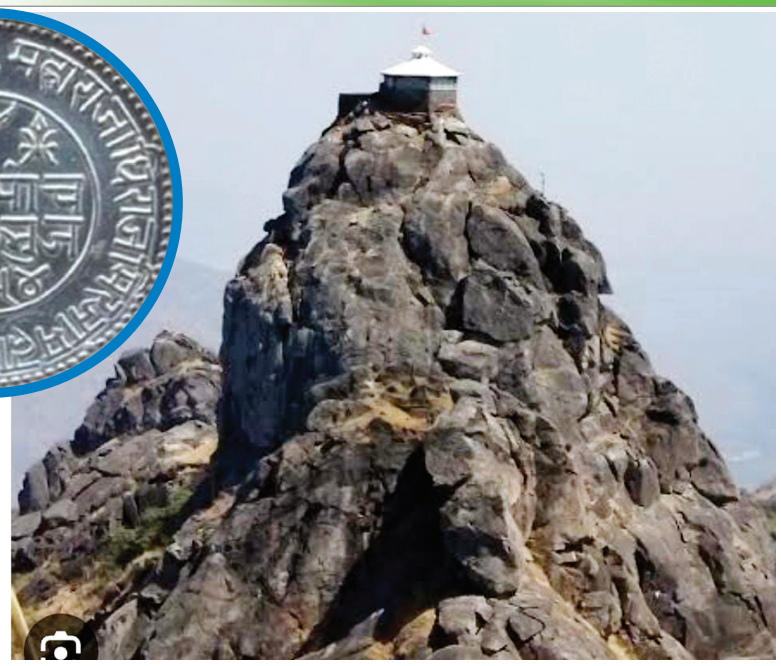

रा जयसिंह और रा खेतसिंह महाराजा पृथ्वीराज का कई युद्ध में सहयोग किया एवं कई बार मुगलों को वीरता पूर्वक परास्त किया इसका विवरण चंद्रवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो की पृष्ठ संख्या 1195 छंद क्रमांक 109 से 133 तक दिया गया है

- रा रायसिंह 1180 से 1140
- रा जयसिंह के पुत्र जयमल 1201 से 1230
- जूनागढ़ और धूमली के बीच युद्ध हुआ जयमल विजय हुए
- रा महिपाल द्वितीय 1230 से 1253
- रा खंगार तृतीय 1253 से1260
- रा मांडली 1260 से 1306

रेवती कुंड के शिलालेख में राजा मांडलिक को मुस्लिम विजेता राजा के रूप में लिखा गया है

रा नवघन चतुर्थ ने 1306 से 1308 तक राज शासन रहा इन्होंने अपने मामा रणजी गोहिल पर जब जफर खान में आक्रमण किया तब नवघन सहयोग किया और वीरता पूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे

रा महिपाल तृतीय 1308 से 1325

इन्होंने अपने शासनकाल में सोमनाथ मंदिर का जीर्णोधार कराया था

रा खंगार चतुर्थ 1325 से 1351 अपने शासन काल में कई छोटे राजवाड़े जो कि मुसलमानों के थे उनसे छीनकर अपने अधीन किया

रा जय सिंह द्वितीय 1351 से 1373

विनय पाटन के तत्कालीन शासक जफर खान ने संधि करने हेतु बुलाया एवं छल से वार किया तब रा जय सिंह ने वीरता पूर्वक जफर खान के 12 सेनापतियों की गर्दन एक ही तलवार के वार से उड़ा दि थी इन सेनापतियों की कब्रे आज भी 12 शहीदों की कब्र के नाम से जानी जाती हैं

- रा महिपाल 1373
- रा मुक्ति सिंह 1373 से 1397
- रा मांडलिक द्वितीय 1397 से 1400

इनकी कोई संतान नहीं होने से इन्होंने अपने छोटे भाई मेंलगदेव को अपनी राजगद्दी सोपी

रा मेलंगदेव 1400 से 1415

उनके शासन काल में मुस्लिम आक्रांता अहमद शाह से युद्ध हुआ जिसमें भयंकर नरसंहार हुआ एवं रानियां को जौहर व्रत का पालन करना पड़ा

रा जय सिंह तृतीय 1415 से 1440

उनके शासन काल में जब अहमद शाह की सेना ने गोपनाथ मंदिर पर आक्रमण किया तब इन्होंने अपनी सुना भेज कर उन मुस्लिम आक्रांताओं को परास्त किया

रा महिपाल पंचम 1440 से 1472

इन्होंने अपने शासनकाल में सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया 1472 में सुल्तान महमूद शाह ने जूनागढ़ पर तीसरी बार आक्रमण किया जिसमें राजपूत को शाका युद्ध करना पड़ा एवं रानियां को जोहार करना पड़ा महाराज वीरगति को प्राप्त हुए और जूनागढ़ सदा के लिए मुसलमानों के हाथों में चला गया

इस युद्ध के बाद पड़ोसी राजा ने वीरता स्वरूप महाराज मांडलिक के पुत्र भूपत सिंह को 84 गांव की जागीर दी

भूपत सिंह 1472 से 1505 जागीरदार भूपत सिंह के वंशज रायजादा कहलाए

महाराजा पृथ्वीराज चौहान के विश्वस्त सहयोगी रहे खेत सिंह जी को महाराजा पृथ्वीराज चौहान ने जुझोतखंड का राजा घोषित किया था

इसी तरह चंदेरी के राजा मेंदनीराय ने चंदेरी पर राज किया विदित हो कि मेंदनीराय राणा सांगा के भांजे थे इनका बावर के साथ युद्ध हुआ था यह युद्ध बहुत भीषण था इस युद्ध में रानी मनीमाला ने 1600 स्त्रीयो के साथ जोहार किया था यह जोहर राजपूतों के इतिहास में दूसरा सबसे बड़ा जोहर था इसी युद्ध में बीमार होने के बावजूद राणा सांगा सहायता के लिए आ रहे थे लेकिन वह युद्ध के लिए पहुंचने के पहले ही अस्वस्थता के कारण श्रीचरणों में चले गए

संकलन

गुजराती मध्यकालीन साहित्य लेखक दुर्गा शंकर शास्त्री
सौराष्ट्र का इतिहास लेखक शम्भुप्रसाद देसाई
दर्शन और इतिहास लेखक राजेंद्र सिंह रायजादा
खंगार राजपूत इतिहास लेखक बी एल ठाकुर
चूड़ासमा राजवंशनी लेखक विक्रम सिंह रायजादा
प्रथविराज रासो लेखक चंद्रवरदाई
प्रभास और सोमनाथ लेखक शम्भुप्रसाद

CERTIFIED NO MC-2443 CERTIFIED NO MC-2443 NABH-CGHS/2015-0542/02 ISO 9001:2008
QUALITY
TECHNOLOGY
COMPETITIVE
CRL™
Diagnostics
LEADING THE WAY PROFESSIONALY
* CRL SWASTHYA CARE
Home Collection Free
CBC, Glucose-F
(Liver Function Test) SGOT, SGPT, Bil-T, Bil-D, Bil-In, GGT
PRO-T, ALB, GLB, A/G, ALKP,
(Kidney Function Test) Uric Acid, Urea, Creatinine, Sodium, Potassium
(Lipid Profile) Chol-T, LDL, HDL,VLDL,TC/HDL, TRIG
(Thyroid Function Test) T3, T4, TSH + Vitamin D+B12+Glycosylated Hemoglobin (HbA1C) +Iron+ TIBC+Transferrin+Urine Complete Examination

Test Name	CRL 1.1	CRL 1.2	CRL 1.3
Lipid Profile	✓	✓	✓
Thyroid Profile	✓	✓	✓
Kidney Function with Calcium	✓	✓	✓
Liver Function with GGT	✓	✓	✓
Complete Blood Count	✓	✓	✓
Complete Urine Examination	✓	✓	✓
Blood Sugar Fasting	✓	✓	✓
HbA1c		✓	✓
Iron Profile			✓
Vitamin B12			✓
Vitamin D 25 - Hydroxy			✓
Special Price	Rs. 999/-	Rs. 1299/-	Rs. 1999/-

12 hours fasting required. Online report availability. For feedback mail us at : info@crldiagnostics.com
Authorized Collection Point
1, Royal Bhagwan Estate, Genhukheda Kolar Road Bhopal
CONTACT US : 7000127872
REGISTRATION ON WHATSAPP : 9826476058
CRL DIAGNOSTICS PVT. LTD.
Regd. Office : Plot No. 10, Avtar Enclave, Opp. Metro Pillar No. 227, Paschim Vihar, Rohtak Road, New Delhi - 110063
Corporate Office : Plot No. 16, Avtar Enclave, Opp. Metro Pillar No. 228, Paschim Vihar, Rohtak Road, New Delhi - 110063
Web.: www.crldiagnostics.com | E-mail : info@crldiagnostics.com | Ph. No.: 011-42-78-78-78

पर्यावरण संरक्षण के लिए लेनी होगी अमृत शपथ

आज हमारा सारा देश गणतंत्र का अमृत महोत्सव मना रहा है। 500 वर्षो से बहु प्रतिक्षित भगवान श्री रामलला भी अयोध्या में विराज गये हैं। सभी तरफ धार्मिक और खुशी का वातावरण है, लेकिन उपभोक्तावादी संस्कृति के बीच पर्यावरण के संरक्षण को भूलते जा रहे हैं। इसका परिणाम जलवायु परिवर्तन और विश्वस्तरीय तापक्रम में वृद्धि स्पष्ट दिखाई दे रही है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण हमेशा विशेष महत्व दिया गया है। कुएं, बाबड़ी—तालाब का निर्माण और बाग—बगीचा लगवाना विंध्य की संस्कृति मे रचा—बसा रहा है। बगीचे का व्रतबंध करना, कुएं की पूजा करना, यहां के समाज की रीति-रिवाज में शामिल था। उपनिषद में कहा गया है, ''सौ कुआं एक बाबड़ी, सौ बाबड़ी एक तालाब, सौ तालाब एक पुत्र सौ पुत्र एक वृक्ष''। इतनी गहरी सोच शायद किसी भी संस्कृति में नहीं है, लेकिन भोगवादी संस्कृति ने अपने परिस्थितकीय तंत्र में तांडव कर संसाधनों का अनुचित उपयोग किया। फलस्वरुप पिछले दो दशकों में प्राकृतिक आपदाओं का कहर भारत समेत सारे विश्व को भोगना पड़ा। पर्यावरण का मुख्य अवयव है हरियाली। हम सब जानते हैं कि दुनिया में ऐसी कोई मशीन नहीं बनी जो ऑक्सीजन पैदा कर सके। एकमात्र पेड़—पौधे ही सूर्य की रोशनी मे कार्बन डाइऑक्साइड और पानी से ऑक्सीजन बनाते हैं। दुनिया में ऑक्सीजन के एकमात्र स्रोत यही है। विडंबना है कि भौतिकता की अंधी दौड़ में हम अपने वन को अंधाधुंध काटे डाल रहे हैं।

विध्यांचल हमेशा पर्यावरणीय दृष्टि से समृद्धशाली रहा है। विंध्य पर्वत श्रृंख्ना गुजरात से मध्यप्रदेश होते हुए उत्तर प्रदेश में बनारस तक जाती है। इसकी कुल लंबाई 1085 किलोमीटर है। इस पर्वत श्रृंखला से केन, बेतवा, टोंस, पार्वती, सिंध और सोन नदियां निकलती हैं। विंध्य पर्वत श्रृंखला और इन नदियों के कैचमेंट में साल और सागौन के बहुमूल्य मिश्रित वन पाये जाते हैं। यह लघुवन उपज और हर्बल दवाईयों के भण्डार हैं। इस अंचल में बांधवगढ़, पन्ना और संजय टाईगर रिजर्व हैं। इस बेल्ट में बाघ से लेकर अनेक तरह के शाकाहारी वन्यप्राणी पाये जाते हैं। आजकल तो हाथी भी बांधवगढ़ और संजय दुबरी टाइगर रिजर्व में डेरा जमाये हुए हैं। मध्यप्रदेश ने 785 बाघों के साथ टाइगर स्टेट का दर्जा प्राप्त किया है। 200 से अधिक बाघ विध्यांचल में पाये जाते हैं। सफेद बाघ दुनिया को विध्यांचल ने ही दिया। विध्यांचल के वनों में सागौन, साल, बीजा, तिनसा, हलदू, फलदू, महुआ, तेन्दू, आमला, अर्जुन, हर्रा, बहेरा इत्यादि के पेड़ पाये जाते है। इसके साथ ही गिलोय, कालमेघ, चिरायता, अश्वगंधा, बहेड़ा, ब्राह्मी, अर्जुन छाल, सर्पगंधा और सनाय इत्यादि हर्बल दवाईयां बहुत बड़ी मात्रा में विंध्य के वनों में पायी जाती हैं। उपभोक्तावादी नीयत के चलते विंध्य के वन खास तौर से अमरकंटक और सीधी अंचल में साल वनों का परिस्थितिकीय तंत्र छलनी हो रहा है।

आज भारत में पर-कैपिटा ट्री यानि एक व्यक्ति के पीछे सर्फ 28 पे? हैं। चाइना में 102, अमेरिका में 716, कनाडा 8953, यूरोप 4000 से अधिक पर कैपिटा ट्री पाए जाते हैं। किसी भी देश मे संतुलित पर्यावरण के लिए कम से कम मैदानी इलाके मे 33 प्रतिशत और पहाड़ों में 66 प्रतिशत वन का होना जरुरी है, लेकिन हमारे देश मे यह लगभग 24.56 प्रतिशत ही है। मध्यप्रदेश में 25.16 प्रतिशत ही वन है। विकास के नाम पर पर्यावरण को खत्म करना ही पर्यावरणीय असंतुलन का प्रमुख कारण है।

प्रदेश में छतरपुर जिले के बक्सवाहा में 382 हेक्टयर वन में 2 लाख 15 हजार पेड़ काट कर हीरा खदान लगाने की चर्चा जोरों पर है। यहां पर 3.42 करोड़ कैरेट हीरे का भंडार होने का अनुमान है। सवाल यह है कि क्या मानव की सांसें हीरा पहन कर लौट आएंगी? क्या बक्सवाहा का परिस्थितिकीय तंत्र में रह रहे चींटी, पक्षी, सांप, नेवले, बैक्टीरिया, फंगी, शैवाल, शाकाहारी—मांसाहारी जीव, नदी, तालाब, कूप और लाखों अदृश्य जीवों की हत्या कर हीरा पहना जरुरी है? लाखों पेड़ जिसमें सागौन आंवला, तेंदू, पीपल, बरगद, अर्जुन, हरड़, बहेड़ा और सैकड़ों प्रकार की हर्बल वन औषधियां शामिल हैं, नष्ट होने के साथ वन पर आश्रित आदिवासियों की आजीविका और ऑक्सीजन बैंक को खत्म किया जा रहा है। इसकी भयावहता का अहसास सरकार को शायद नहीं है। हजारों वन्यप्राणियों की कत्ल की आवाज हम भले ही अनसुना कर दें, लेकिन इनके परिस्थितिकीय तंत्र के नष्ट होने से से जो असंतुलन पैदा होगा उससे आने वाली प्राकृतिक आपदा को क्या हम रोक पाएगें? केदारनाथ आपदा हम शायद भूल गए हैं। पहाड़ों मे वनों के नष्ट होने से भयावह बाढ़ और गोबल वार्मिंग की वजह से ग्लेशियर्स के फटने से हुए हादसा ने हजारों की जान ले ली थी। किसी भी परियोजना के मंजूरी के पूर्व शासन पर्यावरण विशेषज्ञ से इंविरोनमेंटल इम्पैक्ट अस्सेस्मेंट यानि परियोजना लागू होने से पर्यावरण मे पढ़ने वाले कुप्रभाव का अध्ययन करवाती है। जिसमें उस क्षेत्र के गांव, पंचायत जनप्रतिनिधि सभी की राय ली जाती है। क्या सरकार ने ऐसा कोई अध्ययन किया है? और किया है तो उसे सार्वजानिक करना चाहिए। आज कोरोना महामारी से सारी दुनिया अस्त—व्यस्त है। इस महामारी में लाखों लोगों की मौत हुई है। ऑक्सीजन की कमी से अधिकांश मौतें हुईं। वन जो पृथ्वी के फेफड़े कहलाते हैं, उनका ह्रास बहुत बेरहमी से हुआ है। ऐसी घातक बीमारियों का होने मे कहीं ना कहीं पर्यावरण का ह्रास भी एक कारण है।

मध्यप्रदेश में जिलेवार कोरोना केस देखें तो साफ पता चलता है कि जहां सघन वन हैं, जहां जैव विविधता बहुत अच्छी है, वहां कोरोना का प्रभाव अपेक्षाकृत कम है। डिंडोरी, हरदा, मंडला, उमरिया, पन्ना इत्यादि में सघन वन होने से आक्सीजन खूब है। इससे यहां के निवासियों के फेफड़े मजबूत हैं। उनकी प्रतिरोधक क्षमता बहुत अधिक है।

हमारे देश में मिजोरम मे लगभग 82 प्रतिशत और अरुणाचल प्रदेश में लगभग 80 प्रतिशत वन है। यहां कोरोना से मरने वालो की संख्या 36 तथा 114 है। हरियाणा राज्य जो क्षेत्रफल में छोटा है वहां वन 8 प्रतिशत ही है। वहां कोरोना से मौत का अकड़ा 8132 तक पहुंच गया। सघन वन वाले राज्यों मे नागरिकों की प्रतिरोधक क्षमता तुलनात्मक रूप से बेहतर होती है।

आज दुनिया मे ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन से मौसम मे अचानक बदलाव, बाढ, सूखा और बेमौसम बारिश की स्थिति लगातार निर्मित हो रही है। इसका प्रमुख कारण वन नष्ट होने से ग्रीन हाउस गैस जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन तथा वाष्प की वातावरण में अधिकता है। इन गैसों के बढ़ने से पृथ्वी गर्म हो रही है। वर्ष 1940 से 1999 तक 0.35 डिग्री और 1970 से अब तक 0.55 डिग्री सेंटीग्रेड पृथ्वी का तापक्रम बढ़ गया है। इसका परिणाम ग्लेशियर्स का पिघलना, समुद्र के जलस्तर में वृद्ध, बाढ़ आदि देखने को मिल रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग का यही सिलसिला चालू रहा तो इस सदी के अंत तक लगभग 2 डिग्री तापक्रम बढ़ जाएगा और समुद्र के किनारे वाले कई देशों और शहरों का अस्तित्व ग्लेशियर्स के पिघलने, जलस्तर बढ़ने से समाप्त हो जाएगा। जलवायु परिवर्तन से खेती बहुत प्रभावित होगी और खाद्य संकट उत्पन्न होगा।

शासकीय स्तर पर पर्यावरण के संरक्षण के लिए नवंबर 1986 मे पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू किया गया। अधिनियम तो कई हैं, लेकिन उनका प्रभावी ढंग से लागू होना अति आवश्यक है। यूरोप के देश नॉर्वे, फिनलैंड स्वीडन में वन 60 प्रतिशत से अधिक है और यह सारा वन मानव निर्मित है। पौधे रोपित कर वन तैयार किए गए हैं। वहां किसानों को अपने प्राइवेट वनों को संरक्षित करने पर सब्सिडी के रूप में आर्थिक लाभ दिया जाता है। वहां विकास का ऐसा मॉडल लागू किया गया है, जिससे पर्यावरण ह्रास ना हो।

हमें अपनी संस्कृति में बताये गए सूत्रों को समझ कर वन, नदी, तालाब, कूप—बाबड़ी को बचाने, पौधा रोपण करने और भौतिक संसाधनों के बेवजह उपयोग को कम करने की जरूरत है। हमारे समाज में किसी भी धार्मिक आयोजन के पूर्व पड़ा जाने वाला शांति मंत्र भी जिओ और जीने दो के सिद्धांत को बतलाता है।

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः।

यजुर्वेद के इस शांति पाठ मंत्र में सृष्टि के समस्त तत्वों व कारकों से शांति बनाये रखने की प्रार्थना करता है। इसमें यह गया है कि द्युलोक में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हों, जल में शांति हो, औषधि में शांति हो, वनस्पतियों में शांति हो, विश्व में शांति हो, सभी देवतागणों में शांति हो, ब्रह्म में शांति हो, सबमें शांति हो, चारों और शांति हो, शांति हो, शांति हो, शांति हो।

हमें भौतिकता की अंधी दौड़ को छोड़कर विनाश विहीन विकास की अपनी पुरातन सोच अपनाने की शपथ लेनी होगी, जिससे आने वाली पीढ़ियों को एक संतुलित पर्यावरण दे सकें। सांसें हो रही कम, आओ पेड़ लगाए हम का नारा घर—घर में गूंजना चाहिए।

डॉ. एसपीएस तिवारी, आईएफएस
मुख्य वन संरक्षक मप्र (रिटायर्ड)

सुधाविजय को अभियोजन में उत्कृष्टता सम्मान

भोपाल। गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2024 को राज्य स्तर पर वन/वन्यप्राणी अपराधों में उत्कृष्ट अभियोजन कार्य के लिए एडीपीओ सुधाविजय सिंह भदौरिया को सम्मानित किया गया। वन मुख्यालय में प्रधान मुख्य वन संरक्षक और वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश ने स्मृतिचिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर सुधाविजय सिंह भदौरिया को सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि एडीपीओ सुधाविजय सिंह भदौरिया को पूर्व में भी उत्कृष्ट कार्य के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और अवॉर्ड प्रदान किए जा चुके हैं।

बहादुर सिंह तोमर बने राष्ट्रीय सचिव

अखिल भारतीय पंचायत परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारत सरकार पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय की स्वीकृति एवं कार्यवाहक अध्यक्ष अशोक चौहान जी के निर्देशानुसार तथा महामंत्री ध्यानपाल सिंह जी की अनुशंसा पर अखिल भारतीय पंचायत परिषद मप्र. के अध्यक्ष श्री बहादुर सिंह तोमर जी को अखिल भारतीय पँचायत परिषद, नई दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिणी मेँ राष्ट्रीय सचिव के पद पर नियुक्ति प्रदान की गई है। श्री बहादुर सिंह तोमर सामाजिक, पंचायती-राज के कर्मठ एवं सक्रिय कार्यकर्ता हैं और सँगठन से वर्षो से जुडे रहे हैं अपने अध्यक्षता के कार्यकाल मे संगठन मे नये आयाम स्थापित किये हैं और पंचायत परिषद अपेक्षा करता है कि नई जिम्मेदारी को ग्रहण कर परिषद को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान दिलाने मे मददगार सिद्ध होंगे तथा परिषद के संगठन को मजबूत एवं सुदृढ़ करेंगे और गांधी जी के ग्राम स्वराज के स्वप्न को साकार करने हेतु पंचायतीराज व्यवस्था के सुदृढीकरण, ग्राम विकास संबंधी कार्यो एवँ परिषद द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों को सफल बनाने मे अपना पूर्ण योगदान देंगे। बहादुर सिंह तोमर जी की इस नियुक्ति से उनके प्रशंसकों एवं मित्रों मे हर्ष का माहौल है।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

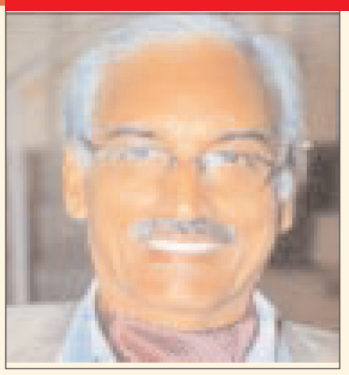

श्री गोपाल कृष्ण छिब्बर

वरिष्ठ अधिवक्ता

75वें

गणतंत्र दिवस की प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अखिल भारतीय पंचायत परिषद, म.प्र.

रामराज तिवारी

दीपसिंह सोनगरा

मनोज मिश्रा

आदित्य भारद्वाज

नीरज चतुर्वेदी

ज्ञानेन्द्र दुबे

इंदु कुमार पाठक

कालूराम मीणा

जीवनलाल नामदेव

राजवीर गुर्जर

भगवान सिंह बागड़ी

महाराज सिंह तोमर

अचरण मेहर

के.के. द्विवेदी

अभिराज सिंह परमार

भोलाराम तोमर

बहादुर सिंह तोमर

राष्ट्रीय सचिव

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा, युवा

अवनीश सिंह

राष्ट्रीय अध्यक्ष

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दीपसिंह सोनगरा

प्रदेश अध्यक्ष

सिंह सिंह चैस

चेतन सिंह चंदेल

अरुण सिंह चैस

राणा अरुण प्रताप सिंह

युवराज सिंह

सौरभ सिंह

रविराज सिंह

राकेश सिंह

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक दिनेश सिंह भदौरिया द्वारा उमा प्रिंटर्स, प्लॉट नंबर 91, ओल्ड पोस्ट आफिस के सामने, जिंसी, जहांगीराबाद, भोपाल से मुद्रित एवं एस— 16, 17 सेकेंड फ्लोर, गुरुकृपा टॉवर जोन—2, एमपी नगर भोपाल मप्र से प्रकाशित। संपादक- दिनेश सिंह भदौरिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।